''नई शिक्षा नीति की प्रासंगिकता एवं विशेषताएं''

एक दिवसीय राष्ट्रीय वेबीनार

दिनांक : 9 सितम्बर 2020

वेबीनार रिपोर्ट

संयोजक : प्रो.(डॉ.) संतोषा कुमार

सह-संयोजक : डॉ. सुनील कुमार

आयोजन सचिव : श्री रमेश चन्द्र यादव

समाज विज्ञान विद्याशाखा

उ0 प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

दिनांक 09 सितम्बर, 2020 को उ0 प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज के समाज विज्ञान विद्याशाखा के तत्वाधान में ''नई शिक्षा नीति की प्रासंगिकता एवं विशेषताएं विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय ऑनलाइन वेबीनार का आयोजन ZOOM APP के माध्यम से किया गया।

कार्यक्रम के प्रारम्भ में डॉ0 त्रिविक्रम तिवारी, सहायक निदेशक/सहायक आचार्य, समाज विज्ञान विद्याशाखा ने वन्दे मातरम् गीत प्रस्तुत किया।

वदे मातरम् गीत प्रस्तुत करते हुए
डॉ0 त्रिविक्रम तिवारी

कार्यक्रम का संचालन करते हुए
आयोजन सचिव श्री रमेश चन्द्र यादव

तत्पश्चात अतिथियों एवं प्रतिभागियों का स्वागत कार्यक्रम निदेशक प्रो0 सुधांशु त्रिपाठी ने किया।

विषय परिवर्तन कार्यक्रम संयोजक डॉ0 सन्तोषा कुमार ने किया।

विषय परिवर्तन करते हुए कार्यक्रम संयोजक डॉ0
सन्तोषा कुमार
एवं
वेबीनार में प्रतिभाग करते हुए विश्वविद्यालय के
निदेशक, शिक्षक, अधिकारी एवं परामर्शदातागण।

आयोजन के मुख्य वक्ता प्रो. ईश्वर शरण विश्वकर्मा, अध्यक्ष, उ0प्र0 उच्चतर शिक्षा सेवा आयोग, प्रयागराज रहें।

नई शिक्षा नीति हमें वापस अपने मूल की ओर ले जाता है : प्रो. विश्वकर्मा

मुख्य वक्ता प्रो. ईश्वर शरण विश्वकर्मा, अध्यक्ष, उ0प्र0 उच्चतर शिक्षा सेवा आयोग, प्रयागराज ने अपने उद्बोधन में कहा कि भारत प्राचीन काल में शिक्षा का केंन्द्र था परन्तु कालान्तर में परिस्थितियाँ वैश्विक रूप से यूरोप केन्द्रित हो गई और हम अपने मूल से भटक गए। नई शिक्षा नीति हमें वापस अपने मूल की ओर ले जाता है। हम द्वन्द्व की स्थिति से निकल कर अब विश्व गुरू बनने की ओर अग्रसर है। 1781 से लगातार शिक्षा के विदूपीकरण का कार्य किया गया है, नई शिक्षा नीति प्रथम प्रयास है अपने मूल की गौरवमयी शिक्षा की ओर वापस लौटने का भौतिकता, अर्थ, काम और एकांगी दृष्टिकोंण से वापस लौटकर वैश्विक दृष्टिकोंण की ओर आगे बढ़ने का आरम्भ है। प्रो0 विश्वकर्मा ने अपने उद्बोधन के अन्त में आयोजकों को धन्यवाद दिया साथ ही यह विश्वास व्यक्त किया कि उत्तर प्रदेश का एक मात्र मुक्त विश्वविद्यालय उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज नई शिक्षा नीति को अपने संस्थान में व्यवहारिक रूप प्रदान करेगा।

मुख्य वक्ता
प्रो. ईश्वर शरण विश्वकर्मा

विशिष्ट अतिथि प्रो0 के रतनम, सदस्य सचिव, आईसीएचआर एण्ड आईसीपीआर, नई दिल्ली रहें।

विशिष्ट अतिथि प्रो0 के रतनम

शिक्षा सदैव समाज का ही दायित्व रहा है : प्रो0 रतनम

विशिष्ट अतिथि प्रो0 के रतनम, सदस्य सचिव, आईसीएचआर एण्ड आईसीपीआर, नई दिल्ली ने कहा कि भारतीय चिन्तन में शिक्षा सदैव समाज का ही दायित्व रहा है, यह कभी भी राज्य का दायित्व नहीं रहा है। नव शिक्षा नीति शिक्षा को समाज के लिए समाज के द्वारा विद्या शिक्षा में रूपान्तरित हो गई तथा कालान्तर में मात्र जीविकोपार्जन का विषय बन गई। अब पुनः शिक्षा को विद्या का स्वरूप देने का प्रयास किया गया है।

आयोजन के मुख्य अतिथि डॉ0 बालमुकुन्द पाण्डेय, सचिव, अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना, नई दिल्ली रहें।

मुख्य अतिथि का उदबोधन

मुख्य अतिथि
डॉ0 बालमुकुन्द पाण्डेय

नई शिक्षा नीति भारतीय जनमानस के करीब : डॉ0 पाण्डेय

मुख्य अतिथि डॉ0 बालमुकुन्द पाण्डेय, सचिव, अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना, नई दिल्ली ने कहा कि नई शिक्षा नीति भारतीय जनमानस से अधिकाधिक संख्या में संवाद स्थापित करके बनाई गई है, इसलिए इसमें आध्यात्मिकता का सुर मिलता है। मानव संसाधन नहीं है, मनुष्य साधक है, शिक्षा साध्य है, सरकार साधना है। नई शिक्षा नीति इसे संभव बनाती है। राष्ट्रीय चेतना के जागरण में विश्वविद्यालयों की महती भूमिका है। हमारे विद्यालय/विश्वविद्यालय समाजिक चेतना के केन्द्र होते थे परन्तु दुर्भाग्य से दुनिया के साथ प्रतिस्पर्धा में भारतीय शिक्षा को परिवर्तित कर दिया गया क्योंकि व्यक्ति को विद्वान बनाने की जगह यन्त्र साधन बनाने पर जोर दिया गया। नई शिक्षा नीति व्यक्ति को ज्ञान और चेतना की ओर ले जाती है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति, प्रो0 कामेश्वर नाथ सिंह जी ने की।

वेबीनार की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो0 कामेश्वर नाथ सिंह ने कहा कि जब भी कोई नई नीति आती है तो जनमानस में उसके प्रति संदेह और जिज्ञासाएं होती है, अतः उस

पर विचार विमर्श एवं संगोष्ठी आवश्यक है। यह प्रथम शिक्षा नीति है जो अधिकतम स्टेक होल्डर्स के सुझावों से निर्मित हुई है। यह राष्ट्रीय नीति है, दल या वर्ग की नीति नहीं है। प्रो0 सिंह ने कहा कि शिक्षा समाज में कितनी पहुंच रही है, यह महत्वपूर्ण है। उन्होंने सुझाव दिया कि उच्च शिक्षण संस्थानों में अपने पाठ्यक्रमों पर व्यापक चर्चा कराई जानी चाहिए तथा शिक्षा को व्यवहारिक धरातल पर उतर कर सार्थक बनाने का प्रयास करना चाहिए। प्रो0 सिंह ने प्रतिभागियों से यह अपेक्षा की कि उनके माध्यम से विश्वविद्यालय को विभिन्न सुझाव प्राप्त होंगें जिन्हें विश्वविद्यालय द्वारा अग्रेषित किया जा सके।

संचालन आयोजन सचिव श्री रमेश चन्द्र यादव, समाज विज्ञान विद्याशाखा ने एवं कुलसचिव, डॉ0 अरूण कुमार गुप्ता ने धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के निदेशक, शिक्षक, अधिकारी एवं परामर्शदाताओं ने प्रतिभाग किया।

दैनिक जागरण

हमेशा जिज्ञासा लेकर आती है नई नीति : प्रो. केएन सिंह

वेबिनार

जासं, प्रयागराज : उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय के समाज विज्ञान विद्याशाखा के तत्वावधान में बुधवार को नई शिक्षा नीति की प्रासंगिकता एवं विशेषताएं विषय पर वेबिनार हुआ। कुलपति प्रो. केएन सिंह ने कहा कि जब भी कोई नई नीति आती है तो जनमानस में उसके प्रति संदेह और जिज्ञासाएं होती हैं। शिक्षा समाज में कितनी पहुंच रही है, यह महत्वपूर्ण है।

मुख्य अतिथि डॉ. बालमुकुंद पांडेय ने शिक्षा नीति भारतीय जनमानस से अधिकाधिक संख्या में संवाद स्थापित करके बनाई है, इसलिए इसमें आध्यात्मिकता का सुर मिलता है। विशिष्ट अतिथि प्रो. के रतनम ने कहा भारतीय चिंतन में शिक्षा सदैव समाज का ही दायित्व रहा है, यह कभी भी राज्य का दायित्व नहीं रहा है। मुख्य वक्ता उच्चतर शिक्षा सेवा आयोग के अध्यक्ष प्रो. ईश्वर शरण विश्वकर्मा ने कहा कि भारत प्राचीन काल में शिक्षा का केंद्र था परंतु कालांतर में परिस्थितियां? वैश्विक रूप से यूरोप केंद्रित हो गईं और हम मूल से भटक गए। मौके पर डॉ. त्रिविक्रम तिवारी, प्रो. सुधांशु त्रिपाठी, डॉ. सन्तोष कुमार, रमेश चन्द्र यादव, डॉ. अरूण कुमार गुप्ता आदि मौजूद रहे।

स्वतंत्र भारत

मुविवि में 'नई शिक्षा नीति की प्रासंगिकता एवं विशेषताएँ' विषय पर राष्ट्रीय वेबिनार आयोजित

नई शिक्षा नीति भारतीय जनमानस के करीब : डा. बाल मुकुन्द पाण्डेय

प्रयागराज। नई शिक्षा नीति भारतीय जनमानस से अधिकाधिक संख्या में संवाद स्थापित करके बनाई गई है, इसलिए इसमें आध्यात्मिकता का सुर मिलता है। [illegible]

हिन्दुस्तान

युवा

नई शिक्षा नीति भारतीय जनमानस के करीब

प्रयागराज | निज संवाददाता

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय के समाज विज्ञान विद्याशाखा के तत्वावधान में बुधवार को 'नई शिक्षा नीति की प्रासंगिकता एवं विशेषताएं' विषय पर वेबिनार हुआ। अध्यक्षता कर रहे कुलपति प्रो. केएन सिंह ने कहा कि जब भी कोई नई नीति आती है तो जनमानस में उसके प्रति संदेह और जिज्ञासाएं होती हैं।

प्रो. सिंह ने कहा कि शिक्षा समाज में कितनी पहुंच रही है, यह महत्वपूर्ण है। मुख्य अतिथि डॉ. बालमुकुन्द पांडेय ने कहा कि शिक्षा नीति भारतीय जनमानस से अधिकाधिक संख्या में संवाद स्थापित करके बनाई गई है, आध्यात्मिकता का सुर मिलता है। विशिष्ट अतिथि प्रो. के रतनम ने कहा कि भारतीय चिन्तन में शिक्षा सदैव समाज का ही दायित्व रहा है, यह कभी भी राज्य का दायित्व नहीं रहा है। मुख्य वक्ता उच्चतर शिक्षा सेवा आयोग के अध्यक्ष प्रो. ईश्वर शरण विश्वकर्मा ने कहा कि भारत प्राचीन काल में शिक्षा का केन्द्र था परन्तु कालान्तर में परिस्थितियां वैश्विक रूप से यूरोप केन्द्रित हो गईं और हम अपने मूल से भटक गए। इस अवसर पर डॉ. त्रिविक्रम तिवारी, प्रो. सुधांशु त्रिपाठी, डॉ. सन्तोष कुमार, रमेश चन्द्र यादव, डॉ. अरुण कुमार गुप्ता आदि मौजूद रहे।

अमृत प्रभात

हिन्दी दैनिक समाचार पत्र

नई शिक्षा नीति भारतीय जनमानस के करीब : डॉ. पाण्डेय

वरिष्ठ संवाददाता, प्रयागराज। उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, के समाज विज्ञान विद्याशाखा के तत्वावधान में बुधवार को 'नई शिक्षा नीति की प्रासंगिकता एवं विशेषताएँ विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय ऑनलाइन वेबीनार का आयोजन किया गया। वेबीनार की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. कामेश्वर नाथ सिंह ने कहा कि जब भी कोई नई नीति आती है तो जनमानस में उसके प्रति संदेह और जिज्ञासाएं होती है, अतः उस पर विचार विमर्श एवं संगोष्ठी आवश्यक है। यह प्रथम शिक्षा नीति है जो अधिकतम स्टेक होल्डर्स के सुझावों से निर्मित हुई है। यह राष्ट्रीय नीति है, दल या वर्ग की नीति नहीं है। प्रो0 सिंह ने कहा कि शिक्षा समाज में कितनी पहुंच रही है, यह महत्वपूर्ण है। उन्होंने सुझाव दिया कि उच्च शिक्षण संस्थानों में अपने पाठ्यक्रमों पर व्यापक चर्चा कराई जानी चाहिए तथा शिक्षा को व्यवहारिक धरातल पर उतार कर सार्थक बनाने का प्रयास करना चाहिए। मुख्य अतिथि डॉ0 बालमुकुन्द पाण्डेय, सचिव, अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना, नई दिल्ली ने कहा कि नई शिक्षा नीति भारतीय जनमानस से अधिकाधिक संख्या में संवाद स्थापित करके बनाई गई है, इसलिए इसमें आध्यात्मिकता का सुर मिलता है। मानव संसाधन नहीं है, मनुष्य साधक है, शिक्षा साध्य है, सरकार साधना है। नई शिक्षा नीति इसे संभव बनाती है। विशिष्ट अतिथि प्रो0 के रतनम, ने कहा कि भारतीय चिन्तन में शिक्षा सदैव समाज का ही दायित्व रहा है, यह कभी भी राज्य का दायित्व नहीं रहा है। नव शिक्षा नीति शिक्षा को समाज के लिए समाज के द्वारा दिया शिक्षा में रूपान्तरित हो गई तथा कालान्तर में मात्र जीविकोपार्जन का विषय बन गई। अब पुनः शिक्षा को विद्या का स्वरूप देने का प्रयास किया गया है। मुख्य वक्ता प्रो. ईश्वर शरण विश्वकर्मा, अध्यक्ष, उ0प्र0 उच्चतर शिक्षा सेवा आयोग, प्रयागराज ने अपने उद्बोधन में कहा कि भारत प्राचीन काल में शिक्षा का केन्द्र था परन्तु कालान्तर में परिस्थितियाँ वैश्विक रूप से यूरोप केन्द्रित हो गई और हम अपने मूल से भटक गए। वेबिनार के प्रारम्भ में डॉ0 त्रिविक्रम तिवारी, सहायक निदेशक, सहायक आचार्य, समाज विज्ञान विद्याशाखा ने वन्दे मातरम् गीत प्रस्तुत किया। तत्पश्चात अतिथियों एवं प्रतिभागियों का स्वागत कार्यक्रम निदेशक प्रो0 सुधांशु त्रिपाठी ने किया। विषय परिवर्तन कार्यक्रम संयोजक डॉ0 सन्तोष कुमार ने किया। संचालन आयोजन सचिव रमेश चन्द्र यादव ने एवं कुलसचिव, डॉ0 अरूण कुमार गुप्ता ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

इलाहाबाद एक्सप्रेस

हिन्दी दैनिक

नई शिक्षा नीति भारतीय जनमानस के करीब : डॉ पाण्डेय

उच्च शिक्षण संस्थान नई शिक्षा नीति पर व्यापक चर्चा करायें : कुलपति

प्रयागराज,। नई शिक्षा नीति भारतीय जनमानस से अधिकाधिक संख्या में संवाद स्थापित करके बनाई गई है। इसलिए इसमें आध्यात्मिकता का सुर मिलता है। मानव संसाधन नहीं है, मनुष्य साधक है, शिक्षा साध्य है, सरकार साधना है। नई शिक्षा नीति इसे सम्भव बनाती है जो जनमानस के करीब है।

उक्त विचार मुख्य अतिथि अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना, नई दिल्ली के सचिव डॉ. बाल मुकुन्द पाण्डेय ने बुधवार को उ0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज के समाज विज्ञान विद्याशाखा के तत्वावधान में आयोजित ''नई शिक्षा नीति की प्रासंगिकता एवं विशेषताएं'' विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय ऑनलाइन वेबीनार में व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय चेतना के जागरण में विश्वविद्यालयों की महती

भूमिका है। हमारे विद्यालय-विश्वविद्यालय सामाजिक चेतना के केन्द्र होते थे। परन्तु दुर्भाग्य से दुनिया के साथ प्रतिस्पर्धा में भारतीय शिक्षा को परिवर्तित कर दिया गया। क्योंकि व्यक्ति को विद्वान बनाने की जगह यन्त्र साधन बनाने पर जोर दिया गया। नई शिक्षा नीति व्यक्ति को ज्ञान और चेतना की ओर ले जाती है।

मुख्य वक्ता उप्र उच्चतर शिक्षा सेवा आयोग प्रयागराज के अध्यक्ष प्रो. ईश्वर शरण विश्वकर्मा ने कहा कि भारत प्राचीन काल में शिक्षा का केन्द्र था। परन्तु कालान्तर में परिस्थितियां वैश्विक रूप से यूरोप केन्द्रित हो गई और हम अपने मूल से भटक गए। नई शिक्षा नीति हमें वापस अपने मूल की ओर ले जा रही है। हम द्वन्द्व की स्थिति से निकल कर अब विश्व गुरू बनने की ओर अग्रसर हैं। 1781 से लगातार शिक्षा के विद्रूपीकरण का कार्य किया गया है।

राष्ट्रीय सहारा

नई शिक्षा नीति भारतीय जनमानस के करीब : डॉ. पाण्डेय

प्रयागराज (एसएनबी)। उप्र राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज के समाज विज्ञान विद्याशाखा की ओर से बुधवार को "नई शिक्षा नीति की प्रासंगिकता एवं विशेषताएँ विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय ऑनलाइन वेबीनार का आयोजन किया गया। वेबीनार की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो कामेश्वर नाथ सिंह ने कहा कि जब भी कोई नई नीति आती है तो जनमानस में उसके प्रति संदेह और जिज्ञासाएं होती हैं, अतः उस पर विचार विमर्श एवं संगोष्ठी आवश्यक है। यह प्रथम शिक्षा नीति है जो अधिकतम स्टेक होल्डर्स के सुझावों से निर्मित हुई है। यह राष्ट्रीय नीति है, दल या वर्ग की नीति नहीं है। मुख्य अतिथि सचिव, अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना, नई दिल्ली डॉ. बालमुकुन्द पाण्डेय ने कहा कि नई शिक्षा नीति भारतीय जनमानस से अधिकाधिक संख्या में संवाद स्थापित करके बनाई गई है, इसलिए इसमें आध्यात्मिकता का सुर मिलता है।